JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

“अनुसूचित जाति की महिलाओं की खेल क्षेत्र में सहभागिता का समाजशास्त्रीय अध्ययन”

पूजा कठेरिया
समाजशास्त्र एवं राजनीतिक विज्ञान विभाग
दयालवाग एजुकेशनल इंस्टिट्यूट दयालवाग, आगरा
(Email – poojakatheriya7@gmail.com)

प्रो.लजवंत सिंह
समाजशास्त्र एवं राजनीतिक विज्ञान विभाग
दयालवाग एजुकेशनल इंस्टिट्यूट दयालवाग, आगरा
(Email – singh.lajwant90@gmail.com)

सार

भारत में महिलाओं की वर्तमान स्थिति तथा उनके कार्यबल पर अध्ययन करे तो यह ज्ञात होता है कि महिलाएं पुरुषों कीभांति सभी स्थानों पर अपनी भागीदारी दर्शा रही है| चाहे वह आर्थिक भागीदारी,शिक्षा के स्तर , राजनीतिक भागीदारी,निर्णयकारी निकायों में प्रतिनिधित्व तथा यह खेल क्षेत्र में भी पीछे नहीं रही तथा जहाँ अन्य वर्ग की महिलाएं जैसे- मैरीकोम, पी.वी.सिंधु लवली चौबे, जैसी महिलाएं खेल क्षेत्र में अपनी भूमिका अदा कर रही है वही इस क्षेत्र में अनुसूचित जाति कि महिलाएं पीछे नहीं रही है वह भी अन्य वर्ग की महिलाओं की तुलना में खेल क्षेत्र में बढ़- चढ़ कर हिस्सा ले रही है| खेल क्षेत्र में अनुसूचित जाति के जुडी कुछ महिलाएं खिलाडी,हिमा दास, तुलसी हेलेन,पी.वी.उषा,शांति,स्वप्ना वर्मन इत्यादि अनुसूचित जाति की महिलाओं ने खेल क्षेत्र में अपनी सहभागिता दिखायी तथा उन्होंने अपने भारत देश का गौरव बढाया है|

मुख्य बिंदु *- खेल, अनुसूचित जाति, महिलाएं, सहभागिता|*

प्रस्तावना

खेल हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं यह केवल शारीरिक स्वास्थ्य एवं तंदुरुस्त भी बनाये रखता है अपितु यह मानसिक विकास में भी सहयता प्रदान करता है खेल के माध्यम से व्यक्ति में अनुशासन, सहनशीलता, समय का पालन, नेतृत्व क्षमता एवं टीम वर्क जैसी आदतों का विकास होता है| व्यक्तियों के जीवन अत्यावश्यक भूमिकाका निर्वाह करता है| यह व्यक्तियों के जीवन से तनाव को समाप्त करता है तथा मानसिक तनाव को दूर करता हैं| मन को प्रसन्न रखने का प्रयास करता है भारतीय समाज में क्रिकेट, कबड्डी, हॉकी, जैसे खेलों का विशिष्ट महत्ता है|

खेल का अर्थ – खेल एक मानवीय गतिविधि है जिसमें शारीरिक परिश्रम तथा कौशल की गतिबिधि को औपचारिक बंदिश माना जाता है| इसमें प्रतिस्पर्धा व सामाजिक भागीदारी के तत्व विधमान होते है यहाँ गतिविधि को प्रतिबद्ध करने वाले व्यवहार के नियम एवं पैटर्न संगठन के द्वारा उनकी औपचारिक उपस्थिति है तथा आमतोर पर इसको खेल के रूप में पूर्ण समर्थन दिया गया है|

खेल का इतिहास

खेल का इतिहास बहुत पुराना है| खेल संस्कृति का अभिन्न अंग है| प्राचीन काल मे लोग अत्यधिक शक्तिशाली होते थे और राजा, महाराजा अपनी सेना में कई शक्तिशाली लोगों को शामिल किया करते थे तथा आस-पास के राज्यों में उन शक्तिशाली लोगों का प्रदर्शन करते थे ताकि पडोसी राज्यों पर अपना दबदबा बनाये रखा जा सके आस-पास के पडोसी राज्य भी पीछे नहीं रहे वह भी अपने शक्तिशाली लोगों का प्रचार-प्रसार करते थे कि कौन-सा राज्य अधिक शक्तिशाली है इसका फैसला मुकाबले के मध्याम से होता था तथा कौन-सा राज्य ज्यादा शक्तिशाली है इसका पता लगाने के लिए प्रतियोगिता आयोजित की जाने लगी इसी समय खेल प्रतियोगिता की शुरुआत हुई व ओलंपिक खेलों की शुरुआत हुई|

प्राचीन समय से दौड़, कुश्ती, भाला फेंकना, तलवारबाजी, मुक्केबाजी, तीरंदाजी, रथों की दौड़ तथा घुड दौड़ इत्यादि कई प्रकार के खेलों को आयोजित किया जाता था धीरे-धीरे कई नए-नए देशों से खेल एवं खिलाडी जुड़ने लगे वही से ओलंपिक खेलों की शुरुआत हुई।

प्राचीन ओलंपिक खेलों का आयोजन 1200 वर्ष पूर्व योद्धा-खिलाडियों के बीच हुआ| ओलंपिक खेल का पहला आधिकारिक आयोजन 776 ईसा पूर्व हुआ था और इसका आयोजन आखिरी बार 394 ईस्वी में हुआ था| इसके बाद रोम के सम्राट थियोड़ोसिस ने इसको मूर्तिपूजा का उत्सव करार देकर इसे प्रतिबिंबित कर दिय्स गया|

1896 में ओलंपिक का आयोजन पहली बार ग्रीस की राजधानी एथेंसे में हुआ| वर्तमान में खेल जहान की सबसे बड़ी प्रतियोगिता है हर चार साल में ओलंपिक खेलों का आयोजन किया जाता है|

अनुसूचित जाति –

हिन्दू जातिगत व्यवस्था में अनुसूचित जाति सबसे निचला स्तर है जिसे अछुत माना जाता है हालाकि जातिगत व्यवस्था को ख़त्म कर दिया गया है परतु जातिगत आधारित भेदभाव क़ानूनी रूप से गैर-कानूनी है| परन्तु यह सांस्कृतिक एवं सामाजिक रूप से भारत व नेपाल में गहराई के साथ जड़ जमाई बैठी है|

इसका तात्पर्य यह है कि दलितों के साथ हर रोज भेद-भाव होता रहता है दलित के खिलाफ अपराध आम बात है दालितों का प्रतिनिधित्व सामाजिक, आर्थिक ,राजनीतिक और व्यवसायों में भी कम है हालाकि दलितों में कला के क्षेत्र में प्रमुखता हासिल करना तथा खेल के क्षेत्र में अपनी जगह बनाना शुरू कर दिया है लेकिन खेल के क्षेत्र में दलितों एवं दलित महिलाओं का प्रतिनिधित्व बहुत कम है|

अध्ययन का महत्व – अनुसूचित जाति की महिलाएं खेल क्षेत्र में भाग लेने से अपनी योग्यताओं एवं अधिकारों को सिद्ध कर सकती है महिलाओं के अंतर्गत इससे आत्मसम्मान व आत्मविश्वास भी जाग्रत होता है| तथा भागीदार बनने से इनकी योग्यताएं, प्रतिभा को जाग्रत करने प्रयास किया जाता है| इससे इनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति में भी परिवर्तन लाया जा सकता है जिससे समाज में इन्हें सम्मान एवं समानता की दृष्टि से भी देखा जा सके तथा अनुसूचित जाति व अन्य वर्ग की महिलाओं के बीच समानता की भावना उत्त्पन्न हो सके|

शोध पद्धति –

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए द्वितीयक स्त्रोतों द्वारा आंकड़ों का संकलन किया गया है| प्रस्तुत आंकड़ों के आधार पर ही सम्पूर्ण शोध अध्ययन का विश्लेषण किया गया है|

उद्देश्य –

1. वर्तमान में महिलाओं का समाज के हर क्षेत्र में भूमिका का अध्ययन|
2. अनुसूचित जाति की महिलाओं की खेल क्षेत्र में भूमिका का अध्ययन।

1. **वर्तमान में महिलाओं का समाज के हर क्षेत्र में भूमिका का अध्ययन** -

खेल क्षेत्र में महिलाएं –

महिलाओं ने वर्षों से समाज के अन्यय एवं पूर्वाग्रहों को झेला है लेकिन वर्तमान के बदलते समय के साथ-साथ महिलाओं एन अपनी एक अलग ही पहचान बना ली है इन्होने लैंगिक असमानताओं एवं लैंगिक रुढिवादिताओं की बेड़ियों को तोड़ दिया है एवं अपने लक्ष्यों तथा सपनों की प्राप्ति के लिए मजबूती के साथ खड़ी है|

वर्तमान में महिलाएं हर क्षेत्र में आगे है चाहे वह आर्थिक क्षेत्र, सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में हो रक्षा के क्षेत्र और खेल क्षेत्र में इत्यादि क्षेत्रों में महिलाएं शामिल है|

क्र.स.	खेल क्षेत्र	महिलाओं के नाम	कार्य
1.	सामाजिक कार्यकर्ता	सिंधुताई संपकाल (श्री 2021)	अनाथ बच्चों की परवरिश
2.	पर्यावरणविद	तुलसी गोड़ा (श्री 2021)	वे “वन विश्वकोश” पुकारी जाती है
3.	रक्षा क्षेत्र	अवनी चतुर्वेदी	एकल रूप में लड़ाकू विमान मिग 21 वाइसन का उड़ान भरने वाली पहली महिला
4.	खेल क्षेत्र	1.मैरी कोम 2.पी.वी.सिंधु	ओलंपिक में बोक्सिंग में मेंडल जितने वाली देश की पहली महिला दो ओलंपिक पदक (कास्य-टोक्यों 2020) तथा (रजत-रियों 2016) जीतने वाली पहली भारतीय महिला
5.	अंतर्राष्ट्रीय संगठन में	गीता गोपीनाथ	अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष (आईएमएफ) में पहली महिला मुख्य अर्थशास्त्री
6.	अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी	टेसी थॉमस	मिसाइल बुमन ऑफ़ इंडिया के रूप में सम्मनित (अग्नि-5 मिसाइल परियोजना से सम्बंधित)

7.	शिक्षा क्षेत्र	शकुंतला देवी शानन ढाका	सबसे तेज मानव संगणना का गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड राष्ट्रीय का अकादमी प्रवेश परीक्षा का पहला महिला बैच में ए0आई0आर0 1

2. अनुसूचित जाति की महिलाओं की खेल क्षेत्र में भूमिका का अध्ययन

खेल क्षेत्र में अनुसूचित जाति की महिलाएं-

1. **हिमा दास** – हिमा दास एक भारतीय धावक एवं खिलाडी है यह साधारण परिवार से है यह उत्तर पूर्वी राज्य असम के एक गाँव में रहती है यह चावल उगने वाले एक किसान की बेटी है यह बचपन से ही मिट्टी के मैदानों में फुटबॉल खेलती थी इन्होने अपने शिक्षक शम्सुल हक की सिफारिश पर स्प्रिंट रनिंग की ओर रुख किया|
2. **तुलसी हेलेन -** तुलसी हेलेन चेन्नई, तमिलनाडु की एक मुक्केबाज खिलाडी है महिला जिनको अक्सर इनके तेज फुटवर्क तथा पंचिंग स्टाइल की वजहसे भारत की लेडी मुहम्मद अली के रूप में देखा जाता है| 2000 में इन्होने 14 वर्ष की आयु में नई दिल्ली में 23वें वाई0एम0सी0ए0 बोक्सिंग चैंपियनशिप में अपना प्रथम स्वर्ण पदक जीता था| इन्होने अपने करियर में चरम पर इन्होने मैरी कोम को हराया|
3. **पीटी उषा** – भारत में पीटी उषा के अक्सर "टैक एंड फिल्ड की रानी" के रूप में जाना जाता है| 1980 के दशक में इन्होने टैक एंड फिल्ड स्पर्धाओं में एशियाई दृश्य पर अपना रुतबा बनाया तथा भारत के लिए बहुत से पदक जीते| 1984 में लोस एंजिल्स ओलंपिक में ओलंपिक फ़ाइनल में पहुँचने वाली पीटी उषा पहली भारतीय महिला बनी, जहाँ पर महिलाओं की 400 मीटर बाधा दौड़ में 1/100 सेकंड से कास्य पदक से वह चूक गयी|
4. **स्वप्रा बर्मन** – स्वप्रा एक रिक्शा चालक तथा चाय बागन में काम करने वाले की बेटी ने एशियाई खेलो में हेप्टाथनॉल स्पर्धा में भारत के लिए 2018 में स्वर्ण पदक जीता| यह पहली भारतीय महिला थी जिन्होंने स्वर्ण पदक हासिल किया स्वप्रा पूर्वी भारतीय राज्य पश्चिम बंगाल की रहने वाली है|

निष्कर्ष –

इस अध्ययन क्षेत्र में अध्ययन करने के पश्च्यात निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए है कि महिलाओं कि स्थिति में अत्यंत परिवर्तन आ गया है और महिलाओं की स्थिति में पहली की अपेक्षा काफी बदलाव आया है साथ ही समाज का दृष्टिकोण भी महिलाओं के प्रति बदला है| आज महिलाओं को वों सभी अधिकार प्राप्त हो गए है जिनकी वह हकदार थी| समाज में आज महिलाएं पुरुषों की भांति अपनी सहभागिता अदा कर रही है| आज वर्तमान में महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कन्धा मिला कर चल रही है| आज महिलाये सभी क्षेत्रों सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, इत्यादि क्षेत्रों में अपनी भागीदारी निभा रही है|

संदर्भ ग्रन्थ सूची

https://hi.m/wikipedia.org

https://www.sportanddev.org

https://www.drishtiias.com

https://www.clearinghouseforsports.gov.au/kb/what-is-sport.